जनजातीय चेतना, कला, साहित्य, संस्कृति एवं समाचार का राष्ट्रीय मासिक

ककसाड़

वर्ष 11 अंक 106
जनवरी, 2025
मूल्य : 25/- रुपए

ककसाड़
राष्ट्रीय मासिक पत्रिका

ISSN 2456-2211

दिल्ली से प्रकाशित

ककसाड़

(जनजातीय चेतना, कला, साहित्य, संस्कृति एवं समाचार का राष्ट्रीय मासिक)

जनवरी 2025 **वर्ष-11 • अंक-106**

संस्थापना वर्ष 2015

प्रबंध एवं परामर्श संपादक
कुसुमलता सिंह

संपादक
डॉ. राजाराम त्रिपाठी

कानूनी सलाहकार
फैसल रिजवी, अपूर्वा त्रिपाठी

•

ग्राफिक डिजाईन
रोहित आनंद

• मुख्य कार्यालय एवं रचनाएँ भेजने का पता •

सी-54 रिट्रीट अपार्टमेंट, 20-आई.पी. एक्सटेंशन, पटपड़गंज, दिल्ली-110092

फोनः 9968288050, 011-22728461

•

• संपादकीय कार्यालय •

151, डी.एन.के. हर्बल इस्टेट, कोण्डागाँव, छ.ग.-494226

फोनः 9425258105, 07786-242506

ई-मेल : kaksaadeditor@gmail.com
kaksaadoffice@gmail.com

वेबसाइट : www.kaksad.com

मूल्य : **रु. 25** (एक प्रति), वार्षिक : **रु. 350/-** संस्था और पुस्तकालयों के लिए वार्षिक : **रु. 500/-** वार्षिक (विदेश) : **$110** यू.एस. आजीवन व्यक्तिगत : **रु. 3000/-** संस्था : **रु. 5000/-**

संपादन-संचालन पूर्णतः अवैतनिक एवं अव्यवसायिक दिल्ली से प्रकाशित होने वाली 'ककसाड़' पत्रिका में प्रकाशित लेखकों के विचार उनके अपने हैं जिनसे संपादकीय सहमति अनिवार्य नहीं।

• ककसाड़ से संबंधित सभी विवादास्पद मामले केवल दिल्ली न्यायालय के अधीन होंगे • **कुसुमलता सिंह** स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक।

अनुक्रम

दिल्ली लाइब्रेरी बोर्ड (संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार) द्वारा पुरस्कृत

4. **संपादकीय**

साक्षात्कार

5. कला की ऐसी लगन कि पक्षाघात में भी काम करते रहे (गोंड कलाकार **परसाद सिंह कुसराम** से **कुसुमलता सिंह** की बातचीत)

संस्मरण

6. गरासियों के बीच में : **ज्ञान चन्द बागड़ी**

लेख

15. तेलंगा खड़िया ब्रिटिश उपनिवेश से लोहा लेना वाला आदिवासी योद्धा : **जनार्दन**

18. मन्नू भंडारी का साहित्य : नारी मुक्ति का वैचारिक आधार : **मंजू कुमारी**

21. गगन गिल ने कविता में अपना मुहावरा तैयार किया है : **कुसुमलता सिंह**

कहानी

28. अधिकार पत्र : **पूजा गुप्ता**

32. पारखी आँखें : **सिद्धनाथ सागर**

कविता/ग़ज़ल

37. उमेश चरपे 38. अरुण चन्द्र राय

38. डॉ. गोपाल राजगोपाल 39. डॉ. राजीव गुप्ता

निबंध

25. रेशमी राहों में पलाश : **डॉ. नन्दकिशोर महावर**

लोक कला

40. बन्धेज या बाँधणू का काम : **ब्रजमोहन जावलिया**

व्यंग्य

41. दिन महीने साल बदलते जाएंगे... : **विनोद कुमार विक्की**

42. गरिमा गर्दिश में : **डॉ. मुकेश असीमित**

पुस्तक समीक्षा

44. तुम लिखो या मत लिखो... : **आशीष दशोत्तर**

46. थार के जातीय समीकरणों का एक महत्त्वपूर्ण उपन्यास : **डॉ. नीरज दइया**

39. **कहावतें**

31. **क्या है ककसाड़?**

27. **यादें**

48. **साहित्यिक समाचार**

आवरण एवं भीतर की कलाकृतियां - परसाद सिंह कुसराम
(गोंड कलाकार) - भोपाल (म.प्र.)
मो. 94799-66209
प्रकृति के चित्रों में रंगों का चयन और चौकोर बर्फी की आकृति का उपयोग चित्र में करना इनकी विशेषता है।

संपादकीय

इन दिनों अर्थात जब तक आपको पत्रिका मिलेगी, नववर्ष के महोत्सव का दौर चल रहा होगा। यानि कि नया साल 2025 आ गया। बड़ी शाइस्तगी के साथ, आहिस्ता मगर दमदार कदमों से अपने होने का विश्वास दिलाता हुआ। ऐसे अवसर पर हमारे यहाँ भारतीय चित्रकला जिसमें आदिवासी कलाएं भी शामिल हैं, उनके ऊपर या उसपर लगा कर पोस्टर बना कर दिए जाने वाले संदेश बहुतायत में हर मंच, हर मीडिया पर बिखरे पड़े दिखाई देते हैं। हम नए वर्ष में प्रवेश कर रहे हैं और हर नया साल, नई दृष्टि और आत्म निरीक्षण की अपेक्षा रखता है। अब वह समय बीत चुका है जब प्रस्तर युग में आदमी केवल आहार के लिए शिकार और संचय करता था जिसे हम अंग्रेजी में 'हंटर्स एंड गैदरर्स' का युग कहते हैं। अब हम हर बात की विवेचना करते हैं और उस पर विमर्श भी करते हैं। हम ऐसे समय में हैं जहाँ शक्ति संक्रमण के कृत्रिम बुद्धिमत्ता (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस), रोबोट, ब्लॉकचेन, बड़े-बड़े डाटा और मानव जीनोम जैसी नई और अग्रणी प्रौद्योगिकियों का उपयोग हो रहा है। जो मनुष्य की सुविधाओं के लिए, होने वाले विकास को सुगम बनाये जाने की कोशिश में जी जान से जुटे हैं। यह कोई विसंगति नहीं है कि ऐसे समय में भी कला की उपयोगिता, उसकी संवेदनशीलता आरक्षित है, और रहेगी, क्योंकि मनुष्य कला धर्मी, कला प्रेमी है। इसी संदर्भ में आज मैं यहाँ भारतीय कलाओं में अंतर्गुम्फित जनजातीय कलाओं पर छोटी सी चर्चा करना चाहता हूँ।

भारतीय कला का इतिहास हमेशा से समृद्ध और जीवंत रहा है क्योंकि इसकी जड़ें प्राचीन सभ्यता तक गहराई से जुड़ी हैं। जिसमें हम्पी के प्राचीन द्रविड़ मंदिर और महल, एलोरा का कैलाशनाथ मंदिर, तीसरी शताब्दी में बनी दीदारगंज यक्षिणी की मूर्ति (जो पटना संग्रहालय में सुरक्षित है) और भारत के आदिवासी समुदाय की कला। जिसमें जंगल, वनस्पति और जीवों का आकर्षक प्रतिनिधित्व मिलता है, जो उसी अद्भुत कलात्मक भारतीय परंपरा का स्थाई भाव रहा है। यही नहीं एलोरा और अजंता की गुफाओं की जटिल नक्काशी से लेकर राजस्थान के लघु चित्रों तक भारतीय कला शताब्दियों से विकसित होती आई है। समय के साथ कलाओं में भी नित नए प्रयोग किए जाते रहे हैं। आधुनिक भारतीय कलाकार अपने को औपनिवेशिक प्रभावों से दूर कर अपनी कला में भारतीय आधुनिकता का निर्माण कर रहे हैं। ऐसी कला जो अंतरराष्ट्रीय दर्शकों से संवाद कर सकती है। सच तो यह है कि आज भारतीय कला एक जटिल और बहुसांस्कृतिक और विश्व स्तर पर जुड़ी हुई दुनिया को दर्शाती है। एक कलाकार अपने अभ्यास की सीमाओं को आगे बढ़ाना जारी रखता है और नए वैश्विक विषयों पर प्रयोग करता रहता है जिससे कला परिदृश्य पर उसका प्रभाव विस्तारित होता रहे। कला कोई भी हो, चाहे कलाकार किसी भी माध्यम में काम करे, संवेदना ऐसी चीज है जो दूसरी कलाओं से उसको जोड़ती है। ध्यान से देखें तो आज भी सभी कलाओं के केंद्र में प्रकृति ही है। प्रकति में हमारी आस्था और विश्वास के बीज छिपे होते हैं। इस आस्था और विश्वास को प्रमुखता से जनजातीय कलाकारों की कलाओं में देखा जा सकता है। मानवीय आवश्यकता और सृजनात्मकता के संदर्भ में जॉन वुल्फगॉग गोएटे कहते हैं-'संपूर्ण ब्रह्माण्ड हमारे लिए ठीक उसी तरह से है जैसे एक श्रेष्ठ भवन निर्माता के लिए विशाल पत्थर की खदान होती है। जो अपने मस्तिष्क से मितव्ययिता, उद्देश्यपूर्णता और दृढ़ता के साथ उभर आने वाले आदर्श केंद्रीय स्वरूप को प्रकृति के इन आकस्मिक पुंजों से आकार देता है।'

सौंदर्य बोध जितना परिपक्व-परिष्कृत और गहन हो, आनंद की अनुभूति भी उतनी ही सघन और स्थायी होती है। हमारा जनजातीय समाज सृष्टि के सौंदर्य बोध, पशु-पक्षी, पेड़-पौधे, नदी-पर्वत और प्रकृति के साथ जीता है। उसकी कला में यही केंद्र स्वर होता है। ककसाड़ के हर अंक पर हम जनजातीय कलाकारों के द्वारा बनाए गए चित्र देते हैं। उनकी चित्रकला जिसमें ब्रह्माण्ड के अनंत रहस्य खुलते हैं वह यही सिद्ध करती है कि यह जनजातीय कलाकृतियां हमारी संस्कृति के प्रदर्शन को प्रेम, सहिष्णुता और समझ के बहुआयामी संदेश द्वारा समृद्ध करती हैं, और यही वह मूल स्वर है जो भारत की सांस्कृतिक समग्रता का प्रतिबिंब हैं। ककसाड़ इसी ध्येय को लेकर प्रकाशित होने वाली बौद्धिक, सांस्कृतिक और सामाजिक आंदोलन की आपकी अपनी पत्रिका है।

नववर्ष की मंगलकामना के साथ अगले अंक तक के लिए विदा!

आपका

डॉ. राजाराम त्रिपाठी
मो. 94252-58105